शतोपदेश

अर्थात्

सारभूत १०० दोहा

एक २ दोहे में अर्थ परमार्थ साधक एक २ उपदेश
नित्य पाठ और नेष्ठार्थ
कण्ठाग्र से कुशाग्र बुद्धि कर्त्ता
समय समय पर मंत्र रूप प्रमाण सुनाया दोहा
परम सुखदाई शिक्षा सबको परमानंददायक।
सन्मार्ग प्रदर्शक आचार्य्य, मोहन उपदेष्टा

श्री पं० श्रद्धाराम जी विरचित

तुलसीदेव द्वारा प्रकाशित।

नीति अनुसार सब अधिकार प्रकाशक को हैं।

सं० वि० १९६५–सं० ई० १९०९

बाम्बे मैशीन प्रैस लाहौर में छपा।

तीसरी बार २०००] [मूल्य -)

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

☞ पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर

हरिज्ञान मन्दिर, लाहौर ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शतोपदेश

॥ दोहा ॥

नमो नमो श्री गुरुचरण, नाशक सकल क्लेश।
तिन की कृपा कटाक्ष से, बरनों शत उपदेश॥१
चार वेद षट् शास्त्र में, बात मिली हैं दोय।
दुख दीने दुख होत है, सुख दीने सुख होय।२
ग्रंथ पंथ सब जगत के, बात बतावत तीन।
राम हृदय मन में दया, तन सेवा में लीन॥३
तन मन धन कर कीजिये, निशदिन परउपकार।
यही सार नर देह में, वाद विवाद बिसार॥४॥
चींटी से हस्ती तलक, जितने लघु गुरु देह।
सब को सुख देवो सदा, परम भक्ति है येह॥५
गुरु बांधव सब पूज्य हैं, पूज्य सकल विद्वान।
पुरुषोत्म सब संत जन, करो सेव सन्मान॥६॥
तिलक छाप माला जटां, भगवें पट तन छार।
दंड कमंडलु वेष तन, उदर भरण-व्यवहार॥७।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जाके त्याग विराग धन, यथा लाभ संतोष ।
सीधा चले सो साधु है, ज्ञानी रोग न रोष॥८
परा और अपरा कही, दो विद्या जग माहि ।
जाने बरते जो इन्हें, पंडित कहिये ताहि॥९॥
नीच ऊच लों जीव को,जानत आप समान ।
सुख देवे दुख को हरे, भक्त तिसी को मान॥१०
लोक और परलोक के, सुख हित जिहं उपदेश ।
सतगुर ताको जानियें, काटत भरम क्लेश ॥११॥
तन मन धन अपर्ण करे, हरे लोक कुल लाज ।
गुरु आज्ञा मस्तक धरे,शिष्य सुधारे काज॥१२
कामक्रोध अर लोभमद,मिथ्याछल अभिमान ।
इन से मनको रोकवो, साचो ब्रत पहचान॥१३
मंद क्रिया से तन रुके, मन सब तजे कुचाल ।
तनताड़नमनकोदमन,यह तपपरमबिशाल१४
स्वास स्वास भूले नहीं, हरि का भय अर प्रेम ।
यही परमजप जानियें,देत कुशल अर क्षेम॥१५
एक टेक जगदीश की, एक त्रिया से नेह ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यानि
देवप्रयाग (गढ़वाल)

जीवन लो जिस के रहे, जान परम यत येह ॥१६
जितनी चाह अचाह की, होत अधिकता चीत।
उतना सुख दुख जानियें, तन मन को है मीत १७
मान धाम धन नारि सुत, इन में जो न अशक्त।
परमहंस सो शांत मन, घर ही माहिं विरक्त ॥१८॥
जहां मान मत्सर मिथुन, मदिरा मिथ्या द्यूत।
सो कुसङ्ग उपहास वह, जाय न तहां सपूत ॥१९॥
न्याय विवेक गुणज्ञता, विद्या शील स्वरूप।
धैर्य सत्य उदारता, समता बसन अनूप। २०।
प्रिय भाषण पुन नम्रता, आदर प्रीति बिचार।
लज्जा क्षमा अयाचना, ये भूषण उर धार ॥ २१ ॥
भाग पराया त्याग के, जो अपना गह लेत।
सो न किसी से दुख लहे, औरन दुःख न देत॥२२
जिस की सब से मित्रता, ता को शत्रु न कोय।
आप भलो सब जग भलो, बुरो भलो नहिं होय २३
पर नारी रत पुरुष जो, पर नर रत जो नार।
शांति न पावे एक क्षण, चिंता शोक अपार॥२४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सीस सफल संतन निमे, हाथ सफल हरि सेव ।
पाद सफल सत्संग गत, तब पावे कछु भेव।२५।
तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र कर दान ।
मन पवित्र हरि भजनकर, होत त्रिविध कल्यान२६
धिकमानसतनभक्तिबिन, धिकमतिबिनाबिवेक ।
विद्याधिकनिष्ठाबिना, धिकसुखबिनहरिटेक ॥२७।
धन पावे कुछ दान कर, अथवा कीजे भोग ।
दान भोग बिन धन गहे, बृथा बटोरत रोग ।२८।
अस्थि मांस मल मूत्र त्वक, सब देहन के बीच ।
गुण करमनकर पूज्य है, नातर जानो नीच ।२९।
जा के दृग लज्जा नहीं, वाक्य बिचल हो जास ।
ता सो धरो न आस कछु, त्यागो सब विश्वास।३०
वेद पुराण बिवाद में, मत उरझे मतिमान ।
सार गहे सब ग्रंथ को, अपनी रुची समान ।३१।
पर दूषण में मन धरे, पर भूषण में बैर ।
सो म्लेच्छ मूरख अधम, धरत नरक में पैर ।३२।
मात पिता बनता तनुज, जा के सब अनुकूल ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यामन्दिर

देह अरोग बिचार धन, यही स्वर्ग मत भूल ।३३।
विद्या बल धन रूप यश, कुल सुत बनता मान ।
सभी सुलभ संसार में, दुरलभ आत्मज्ञान ।३४।
मात पिता जो जो करत, पुत्रन सें उपकार ।
ता को जो भूलत तनय, सो गर्धप निरधार ।३५।
प्रिय भाषी शीतल हृदय, सुंदर सरल उदार ।
जो जन ऐसो जगत में, ता सो सब को प्यार।३६।
पूरण भय जगदीश को, जा के मन में होय ।
गुप्त प्रकट भीतर बहर, पाप करत नहि सोय ।३७
सुख को मूल बिचार है, दुःख मूल अबिचार ।
यह भाष्यो संक्षेप से, चार वेद को सार । ३८ ।
मिले बुराई मोल को, पुन जग निन्दा होय ।
करत भलाई यश मिले, मोल न लागे कोय ।३९
उदय अस्त लो मेदिनी, जो तेरे बश होय ।
कौन काम मन में समझ, जग जीवन दिन दोय४०
चोरी हिन्सा पर तिया, निन्दा मित्थ्या गालि ।
क्रोध इर्षा मान छल, तन बच मन से टाल ।४१।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धन भोगों की खान है, तन रोगों की खान।
ज्ञान सुखों की खान है, दुःख खान अज्ञान।४२।
धीर परखिये विपति में, मीत परषिये भीर।
ज्ञान परखिये हानि में, यति योखित के तीर।४३।
तृष्णा चिन्ता दीनता, माया ममता नार।
ये षट् डाकिन पुरुष का, पीवत रुधिर निकार।४४।
शान्ति दया समता क्षमा, मुदिता विद्या प्रीत।
ये जननी वत पुरुष की, रक्षा करें सनीत।४५।
बचन करो संसार से, सब की बुद्धि समान।
जहां बुद्धि पहुंचे नहीं, तहां न करो बखान।४६।
अभ्युथान परणाम धन, आसन भोजन बार।
घर आये को कीजिये, भेट यथा अधिकार।४७।
तप तीरथ जप यज्ञ को, यही परम सिद्धान्त।
दुःख न दीजे किसी को, सब मन राखेशांत।४८
अपने पर के दुःख सुख, जब लख लेत समान।
पाप न रहे शरीर में, होत द्वैत भ्रम हान।४९।
जो अपने सुख के लिये, औरन को दुख देत।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यामन्दिर,

शूनो आत्मज्ञान से, है मतिमंद अचेत । ५० ।
पर धन गुण यश रूप में, होत ईर्षा जाहिं ।
जलत रहे दुख अग्नि में, कौन बचावे ताहिं ।५१।
लघुन सङ्ग लघुता मिले, गुरुता गुरु जन संग ।
बाल संग मति नाश हो, नारि संग यत भंग ।५२
व्याधि कष्ट है देह का, तिहं औषधि से टार ।
आधि कष्ट है चित्त का, ता को हरे विचार ।५३
अति उदारता कष्ट है, अति संङ्कोच अनर्थ ।
यथा योग्य वर्ते दुहन, सो जन सदा समर्थ ।५४
भाषत भाषन के समय, धरे समय बिन मौन ।
ऐसे बुद्धि निधान को, जीत सकत है कौन।५५
वचन करत नाचत सदा, कर दृग मस्तक नाक ।
शोभ न पावत सभा में, ज्यों हंसन में काक ।५६
जागन सोवन के समय, शुभ अर अशुभ विचार ।
कहां करूंगो क्याकियो, तब सुख मिले अपार५७
अति कठोर ऊंचो अधिक, मान युक्त जिहं बोल ।
सो जन सब संसार की, लेत शत्रुता मोल । ५८

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विद्या बुद्धि विवेक बल, यद्यपि होय अपार ।
मनमथ रहे न जगे बिन, जहां एक नर नार ।५९
अपने अपने अर्थ के, सब जन सब के दास ।
बिना अर्थ अपनो कवन, कोऊ न बैठे पास ।६०।
जहां सौम्यता चाहिये, तहां न होवे क्रूर ।
जहां क्रूरता हो भली, करे सौम्यता दूर । ६१ ।
विद्या उद्यम बुद्धि बल, रूप तथा संयोग ।
षट् कारण धन लाभ के, जानत हैं सब लोग ।६२
मिथ्याहार बिहार से, तन में उपजे ब्याधि ।
बिन विचार बरते जुजन,मन में उपजे आधि ।६३
परमेश्वर परलोक को, भय न होत यदि चीत ।
गुप्त देश में पाप से, कोई न बचतो मीत ।६४।
अज्ञानी तज देत अघ, भय कर लालच पाय ।
ज्ञानी तजे विचार बल, ताको सहज सुभाय ।६५
अपरा का अधिकार जिहं, तासों परा न भाख ।
जो समझत है परा कों, तासों गुप्त न राख । ६६
चार वेद षट् शास्त्र की, विद्या अपरा जान ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ब्रह्म जानिये जास ते, परा तिसी को मान । ६७
धर्म्म शास्त्र है नाम जिस, सो है अपनो चीत ।
शुभ अर अशुभ विवेक सब,उससे सीखो मीत६८
होते अंग उपांग बल, कब याचत मतिमान ।
भीख मांगने से अधिक,अधम बृत्ति नहि आन।६९
बिन कीने उपकार कछु, जो भोगत पर भोग ।
सो कृतघ्न मतिमंद ठग, बहिकाये सब लोग । ७०
जल थल पर्बत रूख तृण, मानुष पशु खग खान ।।
गुण ग्राहक सब से गहे, शिक्षा गुरु वत जान।७१
शक्ति हीन छोड़े नहीं, निज कुल देश लकीर ।
शक्तिवान जिस दिश चले, पाछे चलत बहीर।७२
धन सुत तिय युत बहुत जन,दुखी रहित दिन रैन ।
बिन धनादि विज्ञान बल,निशदिन राखतचैन।७३
मात तात सुत भ्रात तिय, गुरु बांधव पुन मित्र
द्रव्य बिछोरत सबन को, अद्भुत यही चरित्र ।७४
जिस कारज के किये से, अंत होय पछताप ।
तिस आरंभमत कीजिये, आदि विचारो आप।७५

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जो कार्य्य करणो नहीं, कहो न ता को भूल।
जो कह कर करतो नहीं सो जन हलको तूल।७६
अति नीचो नाहि हूजिये, अति ऊंचो मति होइ।
मध्य भाव में बरतिये, शोक न व्यापे कोइ। ७७
निन्दा करे जो आन की, सोजन निन्दित आप।
पर दूषण में चित्त धरे, पावत बहु संताप ॥७८॥
भोग सकल संसार के, प्रथमे सुधा समान।
अंत हलाहल होत हैं, बरते समझ सुजान ॥ ७९
विषय सभी विष रूप हैं, पर विशेष व्यभिचार।
तन मन धन हर मान हर, लज्जा हरत विचार॥८०
कहित बहित पुन रहित में, जा को देखो शुद्ध।
सो सत्संगी जानियें, नातर परम अशुद्ध ॥ ८१ ॥
पूरण मूत्र पुरीष से, यह तन अशुच भण्डार।
कहित शुद्ध जो देह को,सो जन निपट चमार।८२
तन के धोये मल टरे, मन धोये अघ नाश।
तन मन की मल जब टरे, तब सुख होत प्रकाश८३
जगत समुद्र अगाध है, सुख दुख भोग तरंग।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उपजत मिटत स्वभाव से, यही सनातन ढंग ८४
सत रज तम यह तीन गुण, उपजे तन के साथ।
मूल नाश नहं होत है, समता तुमेर हाथ। ८५
युगल दास हैं देह के, सुख दुख वा को नाम।
एक रहित ठाढ़ो सदा, एक करत विश्राम। ८६
निश बीते दिन होत है, दिन बीते निश होइ।
औध इसी में कट गई, कारज बने न कोइ।८७
खान पान सुख भोग में, पशु भी परम सुजान।
कहां अधिकता मनुज की, जो न लखे भगवान८८
त्रिय के हित से तजतजन, तन मन धन कुल लाज
मन भी एक न देत है, हरि के हेतु कुकाज। ८९।
छीजत जब सुत नारि बित, जीव करतबहु शोक।
क्षण क्षण तन छीजित रहे, राखत ताहि न रोक।९०
लोक वेद पशु कुल पशू, गुरु पशु पशु ये चार।
साच झूंठ परखें नहीं, चलें तिहीं अनुसार। ९१।
विद्या सत्य विवेक युत, वचन लेत जो मान।
गुरुमुख ता को जानियें, चतुर प्रवीण सुजान।९२।
जो मन माने सो करे, भयो जो मन को दास।
ताहिं मनोमुख जानियें, बुद्धि न आई पास। ९३।
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जब लों ईश्वर जीव की, होत न दृढ़ पहिचान।
निर्भय पद पावत नहीं, होत न संशय हान।९४।
सत्य कहे जग नष्ट है, झूठ कहे अति कष्ट।
इस विध पूरब बृद्ध जन, बोल न सके सपष्ट।९५।
जाने जब संसार में, सब को अपनो अङ्ग।
रहे न छल बल बैर कछु, आनन्द रहे अभंग।९६।
ताप पाप सन्देह हर, सतगुरु है कोई एक।
तन मन धन हर शिष्यको, गुरुमिलजाहंअनेक।९७
यद्यपि है मत सब भले, तद्यपि यह मत धार।
नाम स्नान दया गहो, पुन दश दोष निवार।९८।
अपनी अपनी कहत हैं, यद्यपि सगरे ग्रन्थ।
ज्ञानवान की दृष्टि में, सब हरिपुर के पन्थ।९९।
परावान की दृष्टि में, यद्यपि अपरा भार।
तद्यपिजगकल्याण हित, बरतेतिहं अनुसार।१००।
हरि हेरत हरि ही भयो, पायो मन विश्राम।
गुरु चरणन श्रद्धा किये, घर ही निकरो राम १०१
स्याही कानी ब्रह्म है, कागद लिखनेहार।
श्रोता वक्ता अदि ले, सभी ब्रह्म निरधार।१०२।

॥ इति ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्री ... देवप्रयाग ... व्यवस्थापक- पं. ... जोशी

४२९४
बोध ५६ ९३

श्री पण्डित श्रद्धाराम जी की प्रणीत पुस्तकें॥

सत्यामृतप्रवाह—रचयताआचार्य्य की विद्या बुद्धि और आयु भर की परीक्षा का अन्तिम निचोड़ कि जो मत मतान्तर के झगड़े मिटा के दृढ़ युक्ति प्रमाण से सिद्ध करता है कि मनुष्य को किस बात पर विश्वास करना चाहिये। हिन्दी उर्दू ... ... ५)

भाग्यवती—देश देशांतर में प्रसिद्ध, सरकार में स्वीकृत स्त्रीशिक्षा की अद्वितीय पुस्तक ... ... ॥)

शतोपदेश—सत्यामृतप्रवाह का सार, १०० दोहे में सौ शिक्षा परम सुखदाई ... ... ।)

नित्यप्रार्थना—महिमन के भाव पर २२ श्लोक भाषा टीका सहित, तन मन बाणी के दश दोष के त्याग और दशगुणके ग्रहण की प्रार्थना जो प्रत्येक जन को आवश्यक है ... ... ।)

सत्यधर्म्ममुक्तावली—मनमोहन भजनों की फूलमाला तीन भाग हिन्दी उर्दू ... . ≡)

धर्म्मसम्वाद—परमोत्तम शिक्षा की लाभकारी बातें जो पण्डित जी के सङ्ग लोगों के प्रश्नोत्तर होते रहे। हिन्दी और उर्दू ... ... ।)

उपदेशसंग्रह—१८ उपदेश उर्दू में ... ... ।)

धर्म्मरक्षा—हिन्दु धर्म्म पर आक्षेपों के उत्तर उर्दू में ॥)

धर्म्मकसौटो—यथा नाम तथा गुण उर्दू दो भाग ... ≡)

श्री ... विद्यामन्दिर. देवप्रयाग (गढ़वाल) ... जोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

असूलेमज़ाहब—पुरानी फारसी अरबी की किताब द-
विस्तान मज़ाहब का उर्दू लाट पंजाब की इच्छा से
किया। इस में दो सौ वर्ष पूर्व के गत मत मतान्तर
की उत्पत्ति और सिद्धान्त हैं। उर्दू ... ... २)

रमलकामधेनु—इस का अर्थ अभिप्राय बिना गुरु के
समझने की प्रतिज्ञा है ... ... ॥)

श्रद्धाप्रकाश—पूर्वोक्त ग्रन्थों के प्रणेता श्री पण्डित जी
का आश्चर्य्यजनक अद्भुत और अमूल्य जीवनचरित्र,
जिस के तुल्य हिन्दी भाषा के भण्डार में अभी तक
किसी आचार्य्य का नहीं। दो भाग में, दो फोटो
चित्र सहित सजिल्द .. .. १॥)

सब ग्रन्थ मिलने का पता:—

मैनेजर
हरिज्ञान मन्दिर, लाहौर॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri